द्विमासिक समाचार पत्रिका

ई-समाचार

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

अंक - 08 नवंबर-दिसंबर वर्ष - 2015

उन्नत भारत अभियान कार्यशाला

मंचस्थ अतिथिगण

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 07 नवंबर 2015 को अरगुल परिसर में उन्नत भारत अभियान कार्यशाला/ बैठक का आयोजन किया गया। उन्नत भारत अभियान (यूबीए) मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक विशेष पहल है जिसका उद्देश्य, उच्च तकनीकी शिक्षा के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों में उपलब्ध विशेषज्ञता का प्रयोग करते हुए नवाचार एवं वहनीय प्रौद्योगिकी के माध्यम से ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना। सर्वप्रथम संस्थान द्वारा दो गाँवों को अंगीकृत किया गया था और इसके विकास से संबंधित कार्य किए गए थे। चतुर्थ दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी ने अपने संबोधन के दौरान भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की और इस दिशा में और अन्य गाँवों को भी अंगीकृत करने पर बल दिया था।

संस्थान द्वारा यूबीए के अधीन अंगीकृत किए गए गाँवों में अरगुल, पोदपाड़ा, कांसापाड़ा एवं खुदुपुर शामिल है । इस योजना के अधीन और अन्य दो गाँव – कटक जिला का जोरकुल और जाजपुर जिला के संदुरिया हैं।

बैठक के दौरान ग्रामीण जीवन शैली के विकास के लिए प्रथम चरण के रूप में निम्न कार्य करने का निर्णय लिया गया – विद्यालयों की शिक्षा में गुणवत्ता, संस्थान के स्थाई परिसर के समीप स्थित गाँवों में इंटरनेट की सुविधा, जल शुद्धिकरण, शौच व्यवस्था, स्वास्थ देखभाल, दक्षता विकास, डिजिटल इंडिया की ओर जागरूकता, अक्षय ऊर्जा का प्रयोग इत्यादि। इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए खोर्धा जिला के जिलाधिकारी ने हर संभव सहायता मुहैया कराने हेतु आशान्वित किया । इस बैठक में यह भी जानकारी दी गई कि राज्य सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा ग्रामीण विकास के लिए संचालित की जा रही गतिविधियों को यूबीए के अधीन शामिल किया जाएगा और जिलाधिकारी इस कार्य के समन्वयक होंगे।

औद्योगिक-शैक्षणिक अंत:क्रिया हेतु कदम

संस्थान ने औद्योगिक-शैक्षणिक अंतः क्रिया की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए है। माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी की उपस्थिति में संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार और श्री डी.एस.रविंद्र राजू, पूर्णकालिक निदेशक, पारदीप फॉस्फेट लिमिटेड ने दिनांक 04 नवंबर 2015 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए । यह कार्यक्रम उद्योग और शैक्षणिक के आपसी सहयोग के समन्वयन को बढ़ावा दने के लिए किया गया है।

हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है। - शंकरराव कप्पीकेरी।

संपादकीय..

ई-समाचार का 08 वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस अंक में हमने संस्थान द्वारा प्रधानमंत्री के आह्वान पर उन्नत भारत अभियान की पहल को मूर्त देने का प्रयास किया है। उन्नत भारत की संकल्पना में संस्थान हमेशा से ही अपनी भूमिका अहम मानता आया है। संस्थान और ओडिशा राज्य सरकार इस कार्य के लिए प्रतिबद्ध है। इसी को ध्यान में रखकर एक कार्यशाला/बैठक का आयोजन किया गया था जिससे संबंधित समाचार इस अंक में प्रकाशित किए गए है।

26 जनवरी 1950 को हमारा संविधान प्रवृत्त हुआ और तब से लेकर अब तक हम संविधान में लगभग एक सौ बार संशोधन किए जा चुके है। किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए संविधान उसकी नींव होती है। संविधान के माध्यम से ही कोई भी देश अपनी कार्यप्रणाली को दिशा देने में सक्षम हो पाता है। इस वर्ष हमने 26 नवंबर को प्रथम संविधान दिवस के रूप में मनाया।

इस अंक में हमने संस्थान एवं ओडिशा राज्य सरकार द्वारा राज्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों से संबंधित खबर को भी प्रकाशित किया। संस्थान ओडिशा राज्य में स्थित है और संस्थान इसके विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील है, इसी दिशा में संस्थान ने राज्य सरकार के साथ मिल कर अनेक गतिविधियों को मूर्त रूप देने से संबंधित खबरों को प्रकाशित किया है।

संस्थान द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय की महत्वपूर्ण पहल ईशान विकास कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जो पूर्वोत्तर छात्रों के स्कूली छात्रों को देश के बड़े शैक्षणिक संस्थान के साथ जोड़ने की एक पहल है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पूर्वी छात्रों के बच्चों को तकनीकी शिक्षा से जोड़ना है और उनकी प्रतिभाओं का निखाराना है। कार्यक्रमों से संबंधित खबर भी इस अंक में प्रकाशित की गई है। देश के विकास का पहिया देश की युवा पीढ़ी पर आश्रित है। संस्थान इस तथ्य को हमेशा स्मरण करता है और नई-नई योजना को क्रियान्वित कर देश को विकास के पथ पर अग्रसारित कर रहा है।

इस अंक में साहित्य मंच के अधीन हिंदी के प्रमुख रचनाकार " धर्मवीर भारती" को 90 वें जन्मदिवस पर उनकी रचना "ठंडा लोहा" को संकलित किया गया है। - **नितिन जैन**

संस्थान परिसर में मुख्य सचिव का दौरा

ओडिशा राज्य के मुख्य सचिव श्री जी.सी. पति ने दिनांक 22 नवंबर 2015 को संस्थान के स्थाई परिसर का भ्रमण किया और संस्थान परिसर के निर्माणाधिन कार्यों को और तीव्र गति प्रदान करने पर चर्चा की। उन्होंने बैठक के दौरान भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर की आगामी योजनाओं को क्रियान्वित करने में राज्य सरकार द्वारा हर संभव सहायत मुहैया कराने हेतु भी अपनी सहमति दी।

माधव गणित प्रतियोगिता

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर में उड़ीसा राज्य के माधव गणित प्रतियोगिता दिनांक. 13.12.2015 को आयोजित की गई । यह एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता है जो अवर स्नातक छात्रों के लिए एस.पी.कॉलेज, पुणे एवं हॉमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र , टी.आई.एफ.आर. मुम्बई द्वारा आयोजित की जाती है। यह प्रतियोगिता राष्ट्रीय उच्च गणित बोर्ड द्वारा वित्त पोषित्त है। डॉ. ताराकांत नायक, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ इस प्रतियोगिता के क्षेत्रीय समन्वयक है।

प्रथम संविधान दिवस

दिनांक 26 नवंबर 2015 को संस्थान के तोषाली भवन परिसर के बोर्ड रुम में प्रथम संविधान दिवस का अनुपालन किया गया। सर्वप्रथम संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार ने संविधान निर्माण समिति के अध्यक्ष डॉ. बी. आर. अंबेडर की फोटो पर माल्यार्पण किया और उनके द्वारा देश को सौंपे गए संविधान के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि हमारा संविधान किसी भी लोकतांत्रिक देश की तुलना में सबसे बड़ा है। इसके साथ ही उन्होंने संविधान से संबंधित महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात निदेशक महोदय ने उपस्थित सभी संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संविधान के अनुपालन हेतु शपथ दिलवाई।

ग्रामीण सड़कों पर प्रबंधन, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान हेतु केंद्र की स्थापना

ग्रामीण सड़कों के सुधार के लिए भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर अपने स्थाई परिसर अरगुल में "प्रबंधन, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र की स्थापना करने जा रहा है। यह ग्रामीण विकास विभाग, ओडिशा सरकार द्वारा वित पोषित्त होगा।

केंद्र की स्थापना को ध्यान में रखते हुए, ओडिशा राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक एवं मुख्य सचिव श्री जी.सी.पति की उपस्थिति में दिनांक 31 नवंबर 2015 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया।

यह केंद्र भा.प्रौ.संस्थानों में अपनी तरह का पहला केंद्र होगा जिसका उद्देश्य प्रशिक्षण के माध्यम से सरकारी इंजीनियरों की दक्षता एवं उनका ज्ञानवर्धन करना है। इस केंद्र में अभिमुखी कार्यक्रम एवं कार्यशाला के माध्यम से ग्रामीण सड़कों के निर्माण एवं अनुरक्षण संबंधी प्रशिक्षण दिया जाएगा जिसका उद्देश्य स्थानीय उपलब्ध एवं वहनीय पदार्थों तथा नवाचार प्रौद्योगिकियों के प्रभावी प्रयोग पर अधिक बल देना होगा।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गुणवत्ता नियंत्रण पर जोर देने के साथ ग्रामीण सड़कों में डीपीआरएस को तैयार करने, नियोजन एवं अभिकल्प एवं अपशिष्ट प्रबंधन का प्रयोग शामिल होगा। यह केंद्र भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर के आधारिक संरचना विद्यापीठ का अभिन्न अंग होगा।

ईशान विकास कार्यक्रम

ईशान विकास कार्यक्रम मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है जिसकी शुरुआत पूर्वोत्तर

क्षेत्र के स्कूली छात्रों को देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के साथ जोड़ने को ध्यान में रख कर की गई है। यह एक बृहद योजना है जिसमें नौवीं एवं ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों को देश के प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे भा.प्रौ.सं., रा.प्रौ.सं. एवं भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान में ग्रीष्मकालीन में दो समूह कार्यक्रम एवं शीतकालीन सत्र में एक समूह कार्यक्रम के माध्यम से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। छात्रों को समाज की आवश्यकता के अनुरूप विज्ञान, प्रौद्योगिकी,

अभियांत्रिकी एवं अन्य उपयुक्त क्षेत्रों में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। मंत्रालय के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का उद्देश्य युवा मस्तिष्क का विकास करना है जिससे वे अपने भविष्य के मार्गों के लिए प्रशस्त हो सके और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार हो सके।

भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर में दिनांक 07-18 दिसंबर 2015 के दौरान इस कार्यक्रम में पूर्वोत्तर क्षेत्र के ऑयल इंडिया उच्च शिक्षा विद्यालय दुलियाजन, डिबरुगढ़ (असम), डीपीएस दुलियाजन, डिबरुगढ़ (असम), वी.के.वी निरजुली, पापुम्परे (अरुणाचल प्रदेश) एवं वी.के.वी याजली, लोवर सुवनसीरि (अरुणाचल प्रदेश) के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया। इस दौरान उपस्थित छात्रों के स्कूल के प्राध्यापक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभांरभ संस्थान निदेशक के संबोधन **"अभियांत्रिकी का परिचय"** के साथ हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित देश के प्रतिष्ठित व्याख्याता प्रो.बी.के.ढिंडवा, प्रो. स्वाधीन पट्टनायक, प्रो. आदित्य मोहांती, प्रो. विनायक रथ एवं प्रो. प्रणय कुमार ने भी उपस्थित छात्रों को अभियांत्रिकी, विज्ञान, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान व्यक्तिगत विकास एवं संचार आदि विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो. एस. महापात्र, प्राध्यापक, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ एवं डॉ. ए. मंडल, खनिज़, पदार्थ एवं धातुकर्म अभियांत्रिकी विद्यापीठ कार्यक्रम के समन्वयक थे।

रॉबोटिक्स पर कार्यशाला

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर की अभिकल्प नवप्रवर्तन केंद्र द्वारा 09-12 दिसंबर 2015 के दौरान संस्थान प्रेक्षागृह में रॉबोटिक्स पर चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान के विभिन्न विद्यापीठों के कुल 37 छात्रों ने कार्यशाला में भाग लिया।

इस कार्यशाला में सहभागियों ने सन्निहित रॉबोटिक्स के विभिन्न पहुलओं के बारे में जानकारी प्राप्त की और संवेदकों, प्रवर्तकों एवं नियंत्रकों के विभिन्न प्रकारों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

कार्यशाला के अंतिम दिन में प्रतिभागियों ने इस दौरान प्राप्त किए तकनीकी गुरों के माध्यम से स्वयं का रॉबोट तैयार किया। इस दौरान बनाए गए सबसे तेज़ और समस्याओं को हल करने वाले रॉबोट को तैयार करने वाले प्रतिभागियों को विभिन्न पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यशाला का आयोजन सफल रहा और छात्रों के बीच इस दौरान अच्छी प्रतिस्पर्धा देखने को मिली।

जीयान पाठ्यक्रम का आरंभ

भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर स्थित आधारिक संरचना विद्यापीठ ने दिनांक 28 दिसंबर 2015 को प्रथम जीयान पाठ्यक्रम (ग्लोबल इनिसिएटिव ऑन एकाडमिक नेटवर्क)"सॉयल स्ट्रक्चर इंटरएक्शन" की शुरुआत की। भारत सरकार के इस प्रमुख कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वैश्विक स्तर पर उपलब्ध शैक्षणिक एवं औद्योगिक के माध्यम से छात्रों एवं संकाय सदस्यों के प्रदर्शन को प्रदर्शित करना जिससे हमारी शिक्षा की प्रणालियों में सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों को जुटाया जा सके। उद्घाटन समारोह में प्रो.वी.आर.पेदिरेड्डी, संकायाध्यक्ष, सतत् शिक्षा, प्रो.आर.के.पंडा, आधारिक संरचना विद्यापीठ, डॉ.एस.आर.दास, पाठ्यक्रम समन्वयक एवं प्रो. शुभमय भट्टाचार्य, अंतरराष्ट्रीय अतिथि संकाय, सुर्रे विश्वविद्यालय, यूके सहित संस्थान के अन्य प्राध्यापकगण तथा रा.प्रौ.सं., भा.प्रौ.सं. एवं अन्य संस्थानों के विभिन्न प्रतिभागीगण उपस्थित थे। संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी. राज कुमार ने इस अवसर पर जानकारी दी कि यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक महत्वपूर्ण पहल है जो वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित पेशेवरों को राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों में अल्प पाठ्यक्रम शिक्षा प्रदान करने हेतु अवसर प्रदान करती है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि यह 06 पाठ्यक्रमों में सबसे पहला पाठ्यक्रम जिसकी शुरुआत संस्थान द्वारा की गई है। इस पाठ्यक्रम में शामिल है -

- हाइलाइट ऑफ द फिल्ड कंडीशन विच रिक्वाइअर द कंसिडरेशन ऑफ सॉयल-स्ट्रक्चर इंटरएक्शन (एसएसआई)

- प्रोवाइड गाइडेंस ऑन द सॉयल बिहेवियर एंड मॉडलिंग पैरामिटर्स फॉर एसएसआई

- एक्पोज़ द पार्टिसिपेंट्स टू वेरिअस न्यूमेरिकल टूल्स अवलेबल टू मॉडल सॉयल-स्ट्रक्चर इंटरएक्शन प्रोब्लम विथ वेरिअस इग्ज़ैम्पल एंड केस स्टडीज़।

उन्नतशील एवं वहनीय ऊर्जा पर कार्यशाला

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर ने नियोजन एवं समन्वयन विभाग, ओडिशा सरकार के सहयोग के साथ दिनांक 30 दिसंबर 2015 को "इन्नोवेटिव एंड सस्टैनबल एनर्जी टेक्नोलॉजीस – आईसेट-01 पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य नीति निर्माताओं, उद्योगपतियों, उद्यमियों, वैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों को एक मंच प्रदान करना था जिसके माध्यम से वहनीय ऊर्जा से संबंधी मुद्दों पर चर्चा की जा सके और वहनीय प्रौद्योगिकियों में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए एक रूपरेखा तैयार की जा सके। इस कार्यशाला में माननीय श्रीमती ऊर्षा देवी, महिला एवं बाल विकास, नियोजन एवं समन्वयन मंत्री उपस्थित थी। उन्होंने अपने संबोधन में वहनीय ऊर्जा के नवाचार प्रयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया। श्री आर. बालकृष्णन्, डी.सी. सह एसीएस, श्री विनोद कुमार, ओएसडी, पी एवं सी विभाग एवं डॉ. एन. पंडा, संयुक्त निदेशक, पी एवं सी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। श्री बालकृष्ण ने जलवायु परिवर्तन से होने वाली तबाही पर चर्चा की और कहा कि जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा के प्रयोग से आज क्षति हो रही है। हम प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग भी ठीक ढंग से नहीं कर पा रहे है हमें इस दिशा में और अधिक चेतना जागृत करने की आवश्यकता है।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. अनिल गुप्ता, भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद ने अपने संबोधन में कहा कि जमीनी स्तर पर अभी अधिक कार्य करना शेष है और नवाचार को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। आज भी हमारे देश में कई ऐसे प्रतिभावान व्यक्ति है जिन्हें सही मंच नहीं मिल पा रहा है। कार्यक्रम में सम्माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ.एस.बी.सिंह, निदेशक एनआरएमल, डीआरडीओ, माननीय अतिथि ने कहा कि आज इस कार्यशाला में उपस्थित युवा मस्तिष्कों को जागरुक करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में उपस्थित संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार ने कहा कि ऊर्जा एवं अक्षय ऊर्जा संस्थान के महत्वपूर्ण अनुसंधान क्षेत्रों में शामिल है। हमारे संस्थान के संकाय सदस्य इस कार्य में विभिन्न परियोजना के माध्यम से संलिप्त है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर ने वर्तमान में 05 गाँवों को अंगीकृत किया है जिससे ओडिशा राज्य के ग्रामीण इलाकों में व्यापक परिवर्तन किया जा सके।

11 वीं राकास बैठक संपन्न

दिनांक 24.11.2015 को संस्थान निदेशक प्रो. आर.वी. कुमार की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 11 वीं. बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने के साथ उनके द्वारा हिंदी में काम करने पर भी जोर दिया गया। समिति के सदस्य-सचिव ने समिति को जानकारी दी कि संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में हर संभव प्रयास कर रहा है। डॉ. राज कुमार

सिंह, प्राध्यापक प्रभारी ने जानकारी दी कि संस्थान द्वारा हिंदी में विज्ञापन जारी नहीं किए जा रहे है, संसदीय समिति के निरीक्षणों के दौरान इस पर भी अधिक बल दिया जाता है। इसके साथ ही समिति के सदस्य प्रो. पी.सी. पांडेय, अभ्यागत प्राध्यापक, एसईओसीएस ने प्रत्येक सप्ताह में एक दिन हिंदी दिन के रूप में अनुपालन हेतु अनुरोध किया और कहा कि इससे न केवल संस्थान में राजभाषा का प्रचार-प्रसार होगा बल्कि संस्थान अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल हो जाएगा।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. डॉ. डी. स्वाईं, सहायक प्राध्यापक पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 19 नवंबर 2015 को आईएनसीओआईएस, हैदराबाद में आईआईसी-बीओबीसीओ परियोजना (एमओईएस एवं भा.प्रौ.सं.भु. की संयुक्त पहल) की पहली समीक्षा हेतु प्रोजेक्ट एडवाइजरी एंड मॉनिटरिंग कमिटि ऑन ओसेन साईंस एंड रिसोर्सेस (पीएएमसी-ओएसआर) की 06वीं समीक्षा बैठक में भाग लिया।

2. डॉ. डी. स्वाईं, सहायक प्राध्यापक पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 20 नवंबर से 02 दिसंबर 2015 के दौरान राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोवा में आयोजित "डायनामिक्स ऑफ द इंडियन ओसेन : परेस्पेक्टिव एंड रेट्रोस्पेक्टिव" पर अंतरराष्ट्रीय सिम्पोज़ियम में भाग लिया।

3.डॉ. अनिमेष मंडल, सहायक प्राध्यापक, खनिज़, धातुकार्मिकी और पदार्थ विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 24-27 नवंबर, 2015 के दौरान डिफेंस मैटलर्जिकल रिसर्च लैबोरेटरी, हैदराबाद, भारत में आयोजित सॉलिडिफिकेशन साईंस एंड प्रोसेसिंग (आईसीएसएसपी6-2015) पर छठां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "Al-14Si—3Mg एल्लॉय ट्रिटेड विथ स्ट्रोनटियम एंड मिस्च मेटल" विषय पर आमंत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

4. डॉ. तबरेज़ खान, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 30 नवंबर 2015 के दौरन चैन्नई में आयोजित फ्रॉन्टियर्स इन एम एस टेक्नोलॉजी एंड एमर्जिंग एप्लिकेशन पर राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

5.डॉ. सौरव सील, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागार एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 30 नवंबर से 02 दिसंबर 2015 के दौरान राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान (एनआईओ), गोवा में आयोजित इंटरनेशनल इंडियन ओसेन एक्सपीडिशन 2 (आईआईओई2) सिम्पयोजियम में भाग लिया और "एनालाइसिस ऑफ एचएफ रेडर डिराइव्ड ओसेन करेंट्स इन नार्थवेस्टर्न बे ऑफ बंगाल" पर पोस्टर प्रस्तुत किया।

6. डॉ. श्रीकांत पात्र, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 03-05 दिसंबर 2015 के दौरान जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता में आयोजित मार्डेन ट्रेंड्स इन इनआर्गेनिक कैमेस्ट्री, एमटीआईसी-XV सम्मेलन में भाग लिया और "फैसिल टेंडम सुजुकी कप्लिंग/ट्रांसफर हाइड्रोजेनेशन रिएक्शन बाइ हिस-हेटेरोस्कॉरपिनेट-पीडी-आरयू कॉम्पलेक्स" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

7. डॉ. अखिलेश कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 03-05 दिसंबर 2015 के दौरान जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता में आयोजित मार्डेन ट्रेंडस इन इनआर्गेनिक कैमेस्ट्री, एमटीआईसी-XV पर सम्मेलन में सिंथेसिस एंड कैरेक्टराइजेशन ऑफ ए नोवल, डाइटॉपिक, रिवर्सिबस एंड हाइली सेलेक्टिव, "टर्न-ऑन फ्लूरेसेंट कैमोसेंसर फॉर Al^{3+} विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

8. डॉ. देबी प्रसाद डोगरा, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 03-06 नवंबर 2015 के दौरान कुआला लम्पुर, मलेशिया में आयोजित तीसरी आईएपीआर एशियन कॉन्फरेंस ऑन पैटर्न रिकॉगनिजशन पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "सैग्मेनटेशन एंड रिकॉग्निजिशन ऑफ टेक्स रिटेन इन 3डी यूजिंग लीप मोशन इंटरफेस" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।.

9. डॉ. नरेश चंद्र साहू, सहायक प्राध्यापक, मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंध विद्यापीठ ने दिनांक 07 दिसंबर 2015 के दौरान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर में आयोजित ईशान विकास कार्यक्रम में " द लाइफ हिस्ट्री ऑफ रिनॉन्लड पर्सेनेलिटिज़ ऑफ द वर्ल्ड" एवं "द रोल एंड इम्पोर्टेंस ऑफ सोशल साईंस" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

10. डॉ. अमृता सत्पती, सहायक प्राध्यापक, मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंध विद्यापीठ ने दिनांक 07 दिसंबर 2015 के दौरान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर में आयोजित ईशान विकास कार्यक्रम में "इम्पोर्टेंस ऑफ कम्यूनिकेशन स्किल्स" विषय पर

व्याख्यान प्रस्तुत किया।

11. डॉ. ताराकांत नायक, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सूरतकल, कर्नाटक में दिनांक 08-12 दिसंबर 2015 के दौरान टॉपोलॉजिकल डायनामिक्स पर आयोजित कार्यशाला 2015 में विषय विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

12. डॉ. एस.आर.सामंतराय, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 09-11 दिसंबर 2015 के दौरान भा.प्रौ.सं. दिल्ली में आयोजित कंट्रोल ऑफ पावर एंड एनर्जी सिस्टम पर 9वाँ आईएफएसी सिम्पोजियम में भाग लिया और "कॉर्डिनेटेड कंट्रोल एंड प्रोटेक्शन ऑफ स्मार्ट-ग्रीड" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

13. डॉ. सौमेंद्र राणा, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 10-11 दिसंबर 2015 के दौरान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर में आयोजित ईशान विकास कार्यक्रम में "द कैमेस्ट्री इन डे टू डे लाइफ : फन फैक्ट्स नोन" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

14.डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 16-17 दिसंबर 2015 के दौरान भा.वि.संस्थान बेंगलुरु में आईईईई रैप 2015 की तकनीकी कार्यक्रम समिति के सदस्य के रूप में भाग लिया और "रिफ्रैक्ट्रोमेटरी यूजिंग माइक्रोकैविटी बेस्ड पीसीएफ मॉडल इंटरफेरोमिटर" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

15.डॉ. सस्मिता बारिक, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 16-19 दिसंबर, 2015 को अमृता विश्वविद्यालय, कोयंबतूर, तमिलनाडु, भारत में ऑन ग्राफ्स विथ सिम्पली स्ट्रक्चर्ड लैपलासियन इजेनवेक्टर्स" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

16. डॉ. अभिजीत दत्ता बाणिक, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 17-19 दिसंबर 2015 के दौरान कोयंबतूर, भारत में "कंप्यूटेशनल एनालाइसिस ऑफ ए सिंगल सर्वर क्यू विथ बैच मार्लोवियल एंड एक्सपोनेनशियल सिंगल वर्किंग वैकेशन पर पेपर प्रस्तुत किया।

17. डॉ. देबाशीष बसु, सहायक प्राध्यापक, आधारिक संरचना विद्यापीठ ने दिनांक 17-20 दिसंबर 2015 के दौरान कोलकाता में आयोजित ट्रांसपोर्टेशन रिसर्च ग्रुप ऑफ इंडिया (सीटीआरजी) तीसरा सम्मेलन में "वैल्यूइंग ट्रेवल एट्रीब्यूट्स ऑफ पब्लिक ट्रांसपोर्ट एज़ परसिव्ड बाइ कॉमम्यूटर्स इन भुवनेश्वर" में पेपर प्रस्तुत किया।

18. डॉ. राज कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 18-20 दिसंबर 2015 के दौरान विज्ञान संस्थान, औरंगाबाद में आयोजित 25वाँ इंडियन कॉलिक्यूम में "पैलोओसेनोग्राफी सिग्निफिकेंस ऑफ लेट क्वाटरनरी डीप सी बेंथिक फोरामाइनिफर्स ऑफ द जापान सी- ए प्रिमिलनरी रिज्लट" पर पेपर प्रस्तुत किया।

जलवायु जोखिम प्रबंधन उपकरण के विकास पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ द्वारा दिनांक 15-20 दिसंबर 2015 के दौरान विस्तारित रेंज पूर्वानुमान प्रणाली का प्रयोग करते हुए कृषि हेतु जलवायु जोखिम प्रबंधन उपकरण के विकास पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। यह कृषि एवं सहकारी विभाग द्वारा वित्तपोषित है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों एवं संगठनों के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों एवं प्रतिभागियों ने भाग लिया और कृषि में फसल

मंचस्थ अतिथिगण

से संबंधित जोखिम को कम करने के लिए वर्षा एवं सतह तापमान के विस्तारित रेंज पूर्वानुमान (मासिक मौसमी स्कैल भविष्यवाणी) पर विशेष चर्चा की तथा इसे और अधिक बेहतर बनाने पर चर्चा की।

आईसीएमओसीई 2015

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के विद्युत विज्ञान विद्यापीठ द्वारा दिनांक 18-20 दिसंबर 2015 के दौरान सूक्ष्म तरंग, प्रकाशिय एवं संचार अभियांत्रिकी पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन सूक्ष्म तरंग, प्रकाशीय एवं संचार अभियांत्रिकी के वर्तमान विकास के लिए समर्पित था। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार ने की। सम्मेलन में पद्मभूषण डॉ. बी.बी. रथ, सह निदेशक, नेवल रिसर्च लैबोरेटरिज़, यूएसए मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

सम्मेलन में वर्तमान की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, जैव संवेदक एवं जैवचिकित्सीय प्रतिबिंब, ऊर्जा एवं पर्यावरण, वाच एवं प्रतिबिंब प्रसंस्करण आदि सम्मेलन के मुख्य विषय थे।

इस सम्मेलन में आयोजक मंडल ने सूक्ष्मतरंग, प्रकाशीय एवं संचार अभियांत्रिकी एवं इसके विपुल अनुप्रयोग क्षेत्रों के वर्तमान प्रवृत्तियों एवं चुनौतियों के अग्रणी छोरों एवं तकनीकी कार्यों की समस्याओं के निवारण के लिए तर्कसाध्य परिचर्चा के माध्यम से सभी को जागरूक किया। यह कार्यक्रम वर्ष 2015 के अंतरराष्ट्रीय प्रकाश वर्ष के अनुपालन की पहल का एक भाग था।

यह सम्मेलन तकनीकी रूप से आईईईई खड़गपुर केंद्र द्वारा सह –प्रायोजक था और इस दौरान प्रस्तुत किए गए पेपरों को आईईईई एक्सप्लोर में प्रकाशित करने पर विचार किया गया था। यह सम्मेलन मुख्य रूप से डीआरडीओ, एलआरएसबी, डीईआईटीवाई एवं सीएसआईआर एवं कॉरपोरेट संगठन जैसे पेरिडॉट टेक्नोलॉजिस एवं किसाइट टेक्नोलॉजिस द्वारा प्रायोजित था।

हिंदी कार्यशाला

राजभाषा एकक द्वारा 28-29 दिसंबर 2015 के दौरान संस्थान के समूह 'क' अधिकारियों/ निजी सचिवों/ कर्मचारियों के लिए "राजभाषा नीति का कार्यान्वयन, व्यवहारिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. डी. गुणसेकरण, कुलसचिव ने की। यह कार्यशाला चार सत्रों में आयोजित की गई थी। प्रथम सत्र संस्थान के समूह 'क' अधिकारियों के लिए आयोजित किया गया। कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. राजीव कुमार रावत, हिंदी अधिकारी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर को व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का आरंभ करते हुए श्री नितिन जैन, कनि. हिंदी अनुवादक ने सभी समूह 'क' अधिकारियों को कार्यशाला में स्वागत किया और कहा कि केंद्र सरकार के कर्मचारियों होने के कारण हम सभी का दायित्व है कि हम अपना दैनिक सरकारी कार्यालयीन कामकाज़ राजभाषा हिंदी में करें। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इस कार्यशाला को और उपयोगी बनाने के लिए इसमें राजभाषा नीति से संबंधित अनेक विषयों को भी शामिल किया गया।

तत्पश्चात डॉ. राज कुमार सिंह, प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा नीतियों का अनुपालन तभी संभव होगा जब अधिकारियों की राजभाषा की नीति के कार्यान्वयन में विशेष भूमिका हो। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार के अनुमोदन से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे डॉ. डी. गुणसेकरण, कुलसचिव ने सर्वप्रथम कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित डॉ. राजीव कुमार रावत, हिंदी अधिकारी का स्वागत किया और कहा कि इस

तरह के कार्यशाला के आयोजन से अधिकारियों को न सिर्फ राजभाषा नीति का ज्ञान होगा बल्कि इसके अनुपालन में उनकी भूमिकाओं से भी उन्हें अवगत कराया जा सकेगा। कार्यशाला में जो विषय दिए गए वह बहुत ही उपयोगी है और इससे संस्थान को अवश्य लाभ मिलेगा।

तदोपरांत डॉ. राजीव कुमार रावत, हिंदी अधिकारी, भा. प्रौ.सं. खड़गपुर ने पावर प्वाइंट की प्रस्तुति के माध्यम से बहुत ही सरल तरीके से संस्थान के अधिकारियों को राजभाषा से संबंधित नीति, अधिकारियों की भूमिकाओं, संसदीय समिति की अपेक्षाएं जैसे विषयों पर अपने अनुभवों को सांझा।

कार्यशाला का द्वितीय सत्र संस्थान के निजी सचिवों के लिए आयोजित किया गया था जो कि उनकी कार्य-शैली पर केंद्रित था। इस दौरान डॉ. राजीव कुमार रावत ने सभी प्रतिभागियों को राजभाषा नीति का परिचय, वार्षिक कार्यक्रम की जानकारी, पत्राचार से संबंधित लक्ष्य, हिंदी टिप्पणियों की गणना, हिंदी के संसाधित उपकरण जैसे विषयों पर जानकारी प्रस्तुत की और अपेक्षा की कि वे अपने दायित्वों का निर्वाहन करते हुए संस्थान में राजभाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ाए।

कार्यशाला का तृतीय सत्र दिनांक 29.12.2015 को संस्थान के कर्मचारियों के लिए आयोजित किया गया था। कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों/विभागों से लगभग 20 कर्मचारियों ने भाग लिया। मुख्य वक्ता डॉ. रावत ने राजभाषा नीति का परिचय, नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग, अनुवाद प्रशिक्षण, डाक प्रविष्टि में हिंदी की प्रविष्टि, हिंदी से संबधित प्रोत्साहन योजनाएं, हिंदी उपकरणों की जानकारी के साथ हिंदी के कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण वेबसाइटों की जानकारी दी। इस दौरान श्री नितिन जैन ने उपस्थित कर्मचारियों से अपेक्षा की कि वे सभी अपने दैनिक कामकाज़ों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाएं जिससे संस्थान राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। इसके साथ ही उन्होनें कहा कि हमारा प्रयास तभी सफल होगा जब आप सभी प्रतिभागीगण अपने दैनिक कार्यालयीन गतिविधियों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाए।

नई नियुक्तियाँ

1. प्रो.बी.के.ढिंडव ने दिनांक 02.11.2015 को अभ्यागत प्राध्यापक के रूप में कार्यग्रहण किया और उन्हें खनिज़, धातुकार्मिकी एवं पदार्थ विज्ञान विद्यापीठ में पदस्थापित किया गया ।
2. श्री दुर्गा प्रसाद आचार्य ने दिनांक 02.11.2015 को सह नेटवर्क प्रशासक (संविदा पर) के रूप में कार्यग्रहण किया और उन्हें कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं एवं प्रकोष्ठ (सीआईटीएससी) में पदस्थापित किया गया।
3. डॉ. दिव्या उंद्राकोंडा ने दिनांक 06.11.2015 को चिकित्सा अधिकारी (आवासीय) के रूप में कार्यग्रहण किया और उन्हें चिकित्सा इकाई के रूप में पदस्थापित किया गया।
4. श्री बिलेंदु मोहांती ने दिनांक 16.12.2015 को अधीक्षण अभियंता (संविदा पर) के रूप में कार्यग्रहण किया और उन्हें अभियांत्रिकी प्रकोष्ठ में पदस्थापित किया गया।
5. डॉ. ललन कुमार ने दिनांक 28.12.2015 को सहायक प्राध्यापक (संविदा पर) के रूप में कार्यग्रहण किया और उन्हें विद्युत विज्ञान विद्यापीठ में पदस्थापित किया गया।
6. डॉ. के.आर.श्रीवत्सन ने दिनांक 30.12.2015 को अभ्यागत प्राध्यापक के रूप में कार्यग्रहण किया है और उन्हें विद्युत विज्ञान विद्यापीठ में पदस्थापित किया गया है।

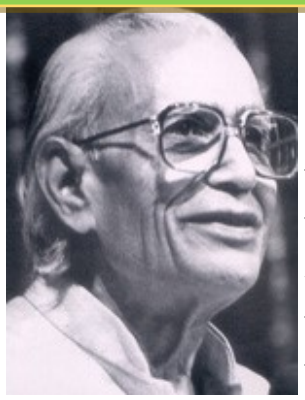

साहित्य मंच

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर 1926 को प्रयाग में हुआ और शिक्षा-दीक्षा भी वहीं विश्वविद्यालय से हुई। भारती ने प्रथम श्रेणी में एम ए करने के बाद डॉ धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध प्रबंध लिखकर पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की। डा. भारती की शिक्षा-दीक्षा और काव्य-संस्कारों की प्रथम संरचना प्रयाग में हुई। उनके व्यक्तित्व और उनकी प्रारंभिक रचनाओं पर पंडित माखनलाल चतुर्वेदी के उच्छल और मानसिक स्वच्छंद काव्य संस्कारों का काफ़ी प्रभाव था। भारती के कवि की बनावट का सबसे प्रमुख गुण उनकी वैष्णवता है। पावनता और हल्की रोमांटिकता का स्पर्श और भीनी झनकार भारती की कविताओं में सर्वत्र पाई जाती है।

इनका प्रथम काव्य-संग्रह 'ठंड़ा लोहा' और प्रथम उपन्यास 'गुनाहों का देवता' अत्यंत लोकप्रिय हुए। इनके द्वारा लिखा हुआ प्रथम काव्य नाटक 'अंधा युग' संपूर्ण भारतीय साहित्य में अपने ढंग की अलग रचना है। इनकी कविताओं की अलग और महत्वपूर्ण पहचान के कारण ही अज्ञेय ने उन्हें अपने द्वारा संपादित दूसरे सप्तक में संकलित किया।
'ठंड़ा लोहा' के अतिरिक्त उनका एक कविता-संग्रह 'सात गीत वर्ष' भी प्रकाशित हुआ। लंबी कविता के क्षेत्र में राधा के चरित्र को लेकर कनुप्रिया नामक उनकी कविता अत्यंत प्रसिध्द हुई। इसके अतिरिक्त उन्होंने प्रयोग के स्तर पर 'सूरज का सातवां घोड़ा' नामक एक सर्वथा नये ढंग का उपन्यास लिखा। 'चांद और टूटे लोग' तथा 'बंद गली का आखिरी मकान' उनके दो कथा-संग्रह हैं। वर्ष 1972 में धर्मवीर भारती को पद्मश्री से अलंकृत किया गया। उनकी 90वीं जन्मजयंती पर प्रस्तुत है उनकी लोकप्रिय कविता :-

"ठंडा लोहा"

ठंडा लोहा! ठंडा लोहा! ठंडा लोहा!
मेरी दुखती हुई रगों पर ठंडा लोहा!

मेरी स्वप्न भरी पलकों पर
मेरे गीत भरे होठों पर
मेरी दर्द भरी आत्मा पर
स्वप्न नहीं अब
गीत नहीं अब
दर्द नहीं अब
एक पर्त ठंडे लोहे की
मैं जम कर लोहा बन जाऊँ -
हार मान लूँ -
यही शर्त ठंडे लोहे की

ओ मेरी आत्मा की संगिनी!
तुम्हें समर्पित मेरी सांस सांस थी, लेकिन
मेरी सासों में यम के तीखे नेजे सा
कौन अड़ा है?

ठंडा लोहा!
मेरे और तुम्हारे भोले निश्चल विश्वासों को
कुचलने कौन खड़ा है ?
ठंडा लोहा!

ओ मेरी आत्मा की संगिनी!
अगर जिंदगी की कारा में
कभी छटपटाकर मुझको आवाज़ लगाओ
और न कोई उत्तर पाओ
यही समझना कोई इसको धीरे धीरे निगल चुका है
इस बस्ती में दीप जलाने वाला नहीं बचा है
सूरज और सितारे ठंढे
राहे सूनी
विवश हवाएं
शीश झुकाए खड़ी मौन हैं
बचा कौन है?
ठंडा लोहा! ठंडा लोहा! ठंडा लोहा!

मार्गदर्शक : डॉ. राज कुमार सिंह (प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा)
सलाहकार : डॉ. अखिलेश कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस एवं डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस
संपादक : श्री नितिन जैन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक